प्रकाशन तिथि : 01 फरवरी, 2023
प्रेषण तिथि : 04 फरवरी, 2023

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 26 | अंक 22 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

हम जहां हैं वहीं से काम शुरू करें: संरक्षक श्री

(पूज्य श्री की जन्मस्थली बेरसियाला में समारोह पूर्वक मनाई 99वीं जयंती)

स्मरण उन्हीं को किया जाता है जो अपना जीवन दूसरों के लिए अर्पित कर देता है। प्राणी मात्र के लिए जो संवेदनशील हैं, वही स्मरणीय है। इसी में राष्ट्र और मानवीयता की बात भी आ जाती है। मानवता की पीड़ा यदि हम नहीं समझ सकते तो हम संवेदनशील नहीं हैं। तब ना हम क्षात्रधर्म का पालन कर सकते, ना हम स्वधर्म का पालन कर सकते। तनसिंह जी ने छोटा सा सूत्र दिया था कि ईश्वर को प्राप्त करने के लिए अंतःकरण की शुद्धि आवश्यक है। अंतःकरण शुद्ध होता है सद्कर्मों से। सत्कर्म क्या है? तन सिंह जी ने स्वधर्म का पालन करने को ही सद्कर्म बताया। स्वधर्म का अर्थ है कर्तव्य पालन। हम जहां हैं वहीं से काम शुरू करें। तन सिंह जी को स्मरण करने का यही तरीका है कि हम उनके बताए हुए मार्ग पर चलें। उपर्युक्त बात माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर ने 25 जनवरी को बेरसियाला (जैसलमेर) में पूज्य श्री तनसिंह जी की 99वीं जयंती पर आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि हम भाग्यशाली हैं कि हमें मनुष्य जन्म मिला है और यह मिला है ईश्वर को जानने के लिए, ईश्वर को पाने के लिए। भगवान ने हम को सुख पाने के लिए भेजा है और लोग दुखी हो रहे हैं। इसी को हम प्रगतिशीलता का नाम दे रहे हैं। भगवान ने जो मार्ग हमारे लिए तय किया था, उसको छोड़ कर कहीं और भटकना प्रगति नहीं है। माता-पिता यदि संस्कारी हों तो बच्चों को किसी पाठशाला में भेजने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन आज सभी इतने दुखी हैं कि उनका संस्कार से कोई लेना-देना नहीं रहा। हम बच्चों को अच्छी से अच्छी शिक्षा दिलाने का प्रयास करते हैं, लेकिन हम यही नहीं जानते हैं कि अच्छी शिक्षा क्या होती है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

योग्यता नहीं है तो अर्जित करें: सरवडी

(संघशक्ति में केंद्रीय अर्द्धवार्षिक समीक्षा बैठक संपन्न)

भगवान ने हमारे पर कृपा करके हमें संघकार्य में माध्यम बनाया है। ऐसे में यदि हमें दिए गए दायित्व योग्य नहीं हैं, तो हमें योग्यता अर्जित करनी है। हम ऐसी कोशिश करेंगे तो आने वाली पीढ़ी भी हमारा अनुसरण करेगी। उपर्युक्त बात वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की केंद्रीय अर्द्धवार्षिक समीक्षा बैठक में उपस्थित केंद्रीय कार्यकारियों और संभाग प्रमुखों से चर्चा करते हुए कही। उन्होंने कहा कि हमने जो लक्ष्य लिया वह पूरा ना हो पाए, यह चिंता की बात नहीं है लेकिन जितना कार्य हुआ है उसका नियमित फॉलोअप लिया जाना आवश्यक है। सभी स्वयंसेवकों से नियमित संपर्क रखा जाए और उन्हें प्रेरित किया जाए। बैठक केंद्रीय कार्यालय संघशक्ति में 15 जनवरी को आयोजित हुई। बैठक में विगत उच्च प्रशिक्षण शिविर के बाद हुए संघ कार्य की संभागवार समीक्षा की गई और शेष सत्र के लिए कार्य योजना तैयार की गई। स्वयंसेवकों के साथ संपर्क को गहन बनाने के लिए माननीय संघप्रमुख श्री, केंद्रीय कार्यकारी एवं वरिष्ठ स्वयंसेवकों के संभागों में प्रवास तथा विशेष शिविरों के आयोजन पर चर्चा की गई। इस सत्र में अब तक हुए प्राथमिक एवं माध्यमिक प्रशिक्षण शिविरों की समीक्षा शिक्षण के स्तर, शिविरार्थियों की संख्या और उनके स्तर आदि के संदर्भ में की गई, साथ ही आगामी उच्च प्रशिक्षण शिविर के लिए योग्य स्वयंसेवकों से संपर्क प्रारंभ करने का निर्णय लिया गया। बैठक में दायित्वाधीन सहयोगियों के कार्यों की नियमित मॉनिटरिंग, संघशक्ति-पथप्रेरक की ग्राहक सदस्यता, संघ साहित्य का प्रचार प्रसार, आगामी शिविरों के प्रस्ताव आदि पर भी चर्चा हुई। केंद्रीय बैठक के पश्चात सभी संभागों में संभाग स्तरीय अर्द्धवार्षिक समीक्षा बैठक आयोजित करने का भी निर्णय लिया गया। जनवरी 2023 से लेकर जनवरी 2024 तक की अवधि को पूज्य तन सिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया। इसके लिए प्रत्येक संभाग में 100 स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। 100 कार्यक्रम पूरे संघ में ऐसे आयोजित होंगे जिनमें 500 से अधिक संख्या हो।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

पंकज कुमार सिंह बने उप राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार

भारत सरकार ने सीमा सुरक्षा बल के सेवानिवृत्त महानिदेशक पंकज कुमार सिंह को उप राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार नियुक्त किया है। उन्हें दो वर्ष के लिए पुनर्नियोजन अनुबंध पर नियुक्त किया गया है। पंकज कुमार सिंह पूर्व पुलिस महानिदेशक और देश में पुलिस सुधारों के सूत्रधार माने जाने वाले प्रकाश सिंह के पुत्र है। प्रकाश सिंह जी भी सीमा सुरक्षा बल के महानिदेशक रह चुके हैं तथा ये दोनों इस पद पर पहुंचने वाले पहले पिता-पुत्र हैं। पंकज कुमार सिंह राजस्थान कैडर के 1988 बैच के भारतीय पुलिस सेवा अधिकारी हैं। वे अपनी कर्तव्यनिष्ठता और दक्षता के साथ ही कार्यक्षेत्र में नवाचार के लिए भी जाने जाते हैं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

देशभर में उत्साह से मनाई पूज्य श्री तनसिंह जी की 99वीं जयंती

बाड़मेर

पाली

भायंदर

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य श्री तनसिंह जी की 99वीं जयंती 25 जनवरी को देशभर में उत्साह पूर्वक मनाई गई जिसमें अपने प्रेरणास्त्रोत व मार्गदर्शक के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए स्वयंसेवकों व समाजबंधुओं ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। मुख्य कार्यक्रम पूज्य श्री की जन्मस्थली बेरसियाला (जैसलमेर) में आयोजित हुआ। इसके अतिरिक्त संभाग, प्रांत एवं शाखा स्तर पर भी देशभर में कार्यक्रम आयोजित हुए। टोंक जिले में राजपूत समाज बालिका छात्रावास निवाई में पूज्य तन सिंह जी की जयंती मनाई गई। संघ के केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ ने पूज्य तनसिंह जी की शिक्षा और संस्कारों पर प्रकाश डालते हुए उनके व्यक्तित्व के बारे में उपस्थित समाज बंधुओ को अवगत करवाया और उनके विचारों के अनुरूप कर्म योग पर चलते हुए अपने मानव जीवन को सार्थक बनाने की बात कही। उन्होंने कहा कि तन सिंह जी ने अपने जीवन में जो भी लक्ष्य निर्धारित किया उस पर शत प्रतिशत खरे उतरे और उसी प्रकार हमें भी खरे उतरने की प्रेरणा लेनी चाहिए। प्रांत प्रमुख जयपुर ग्रामीण दक्षिण-पश्चिम देवेन्द्र सिंह बरवाली, रेवत सिंह धीरा प्रांत प्रमुख दिल्ली एनसीआर, एडवोकेट तेज भंवर सिंह नटवाड़ा सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे। जालौर संभाग के पाली प्रान्त में विजय बालाजी मंदिर परिसर, सरदार समन्द रोड, पाली में जयंती कार्यक्रम आयोजित किया गया। हीर सिंह लोड़ता ने पूज्य तनसिंह जी की जीवनी को विस्तार से बताया। सम्भाग प्रमुख अर्जुन सिंहजी देलदरी ने तनसिंह जी के जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही और तनसिंह जी के 100वीं जयंती पर दिल्ली में होने वाले आयोजन के बारे में भी जानकारी देते हुए कार्यक्रम को हीरक जयंती की तरह भव्य बनाने हेतु समाजबंधुओं से आह्वान किया। उन्होंने वर्तमान में महापुरुषों की जातियों से होने वाली छेड़छाड़ एवं ऐतिहासिक तथ्यों से तोड़ मरोड़ के पर भी रोष जताया। संतोष कंवर गंवारडी, झुंझार सिंह देणोक, छेल सिंह साठिका, खुशवीर हुणगांव, गौरवपाल सिंह ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में प्रांत प्रमुख महोब्बत सिंह धींगाणा सहित सहयोगी उपस्थित रहे। मातृशक्ति की भी उपस्थिति रही। जालौर संभाग के सांचौर रानीवाड़ा प्रांत में आकोली के राजपूत कोटडी में भी जयंती मनाई गई। प्रांत प्रमुख महेंद्र सिंह कारोला ने बताया कि तनसिंह जी ने हमें संघ के रूप में अनुपम भेंट दी है। प्रेम सिंह अचलपुर और ईश्वर सिंह चौरा ने भी अपने विचार रखे। रेवत सिंह जाखड़ी व किशनसिंह आकोली ने बालक-बालिकाओं से संघ से जुड़ने का आह्वान किया। जालोर प्रांत के बाला गाँव के रावली पोल में भी जयन्ती मनाई गई। सौभाग्य सिंह पांचौटा ने पूज्य श्री का संक्षिप्त जीवन परिचय दिया। वरिष्ठ स्वयंसेवक मदन सिंह थुंबा, ईश्वर सिंह देचू, हनुमंत सिंह वाला, खंगार सिंह कालोपादर ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी ने संघ का परिचय देते हुए उपस्थित समाज बंधुओं से संघ के शाखा एवं शिविरों में अपने बालक-बालिकाओं को भेजने का आह्वान किया। कार्यक्रम मे ठाकुर गोवर्धन सिंह बाला, बृजपाल सिह सहित समाजबंधुओं व मातृशक्ति ने भाग लिया। राजेंद्र सिंह भवरानी ने कार्यक्रम का संचालन किया। सिरोही जिले के देलदर गांव में भी जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ। गणपत सिंह भवरानी ने उपस्थित समाज बंधुओ को संघ का परिचय देते हुए बताया कि संघ आज समाज की आवश्यकता है। हमें हर फिसलन से स्वयं को बचाते हुए समाज में संघ कार्य को करना है। कार्यक्रम में दलीप सिंह मांडानी, मांगू सिंह बावली, गणपत सिंह देवड़ा, दीपेंद्र सिंह पिथापुरा, बालू कंवर मांडानी व दिलखुश कंवर देलदर ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में मानगढ़, बावली, नवारा, देलदर, मंडवारिया, मनोरा, जामोतरा, भूतगांव, सतापुरा, मनादर, झाड़ोली वीर, कैलाश नगर, नारादरा, मांडाणी सहित जिले भर से आए सैकड़ों लोगों ने भाग लिया। प्रांत प्रमुख ईश्वर सिंह सरण का खेड़ा सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। चित्तौड़गढ़ में बड़ी सादड़ी स्थित राजराणा बाग में भी समारोह पूर्वक जयंती मनाई गई। वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया ने पूज्य श्री का जीवन परिचय दिया। लक्ष्मी कंवर खारड़ा ने महिला संस्कारों के महत्त्व के बारे में बताया। बार एसोसिएशन के अध्यक्ष रघुवीर सिंह बड़ीसादड़ी व गजेंद्र सिंह बड़ीसादड़ी ने क्षत्रिय संस्कार प्राप्त करने हेतु बालक-बालिकाओं को संघ के शिविरों में भेजने की बात कही। अनुराधा कंवर झाला ने कविता प्रस्तुत की। भूपाल नोबल्स संस्थान उदयपुर के महासचिव महेंद्र सिंह अगरिया, ग्रुप कैप्टन गजेंद्र सिंह बांसी, हनुमंत सिंह बोहेड़ा ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। संभाग प्रमुख ब्रजराज सिंह खारड़ा ने कहा कि जब-जब विष तत्व संसार में बढ़ता है, उसका संहार करने के लिए तनसिंह जी जैसे महापुरुषों का प्रादुर्भाव होता है। इस अवसर पर संघ के केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली, जौहर स्मृति संस्थान के उपाध्यक्ष शक्ति सिंह मुरलिया एवं कार्यकारिणी के अन्य सदस्यों सहित सैकड़ों की संख्या में समाजबंधु व मातृशक्ति उपस्थित थे। समारोह का संचालन दिलीप सिंह रूद तथा नरेंद्र सिंह नरधारी ने किया। सभी ने पूज्य श्री की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की। श्री क्षत्रिय युवक संघ के नागौर संभाग के लाडनूं प्रांत के बैनाथा, खोजास, भंडारी, निम्बी जोधा व ढींगसरी गांव में जयंती कार्यक्रम आयोजित हुए। खोजास में संभाग प्रमुख शिंभू सिंह आसरवा, भगवतसिंह सिंघाना, जयसिंह सागु बड़ी , जितेन्द्र सिंह सांवराद सहित अनेकों समाजबंधु सम्मिलित हुए। कुचामन सिटी स्थित संभागीय कार्यालय आयुवान निकेतन में भी जयंती मनाई गई। कुचामन प्रांत के नेणिया गांव में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ। श्री अमर राजपूत छात्रावास नागौर, श्री चारभुजा छात्रावास मेड़ता सिटी और न्यामा गांव में भी कार्यक्रम आयोजित हुए। नागौर जिले के परावा गांव में भी 22 जनवरी को पूज्य श्री की जयंती मनाई गई। जोधपुर संभाग के शेरगढ़ प्रांत में बेलवा राणाजी गाँव के पूर्व विधायक स्व. मनोहरसिंह ईन्दा स्टेडियम में पूज्य श्री की जयंती मनाई गई। संभाग प्रमुख चंद्रवीर सिंह देणोक ने कहा कि तनसिंह जी के आदर्शों पर चलते हुए जीवन में आगे बढने के लिए संयमित जीवन जिएं एवं हमारे कार्यों में सर्वजन कल्याण की भावना समाहित हो। उन्होंने जन्म शताब्दी वर्ष की जानकारी देते हुए इस महायज्ञ में आहुति देने का समाजबंधुओं से आह्वान किया। कार्यक्रम का संचालन महेंद्रसिंह सेखाला ने किया। प्रांत प्रमुख भैरुसिंह बेलवा, राणा प्रतापसिंह ईन्दा, पूर्व प्रधान भवंरसिंह ईन्दा, पूर्व प.स. सदस्य सवाईसिंह खारीबेरी, डा. लक्ष्मणसिंह गड़ा, गुलाबसिंह मेरिया, पूर्व सरपंच गोरधनसिंह सहित सैकड़ों समाजबंधु कार्यक्रम में उपस्थित रहे। जोधपुर शहर प्रांत का कार्यक्रम राजेंद्र नगर डिगाड़ी में सम्पन्न हुआ, जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक चैन सिंह बैठवास ने पूज्य श्री के साथ बिताये हुए समय के संस्मरण सुनाते हुए उनके जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही। महेंद्र सिंह गुजरावास ने जन्म शताब्दी वर्ष के बारे में जानकारी दी। इनके अतिरिक्त संभाग में बापिणी, पालड़ी सिद्धा, परमवीर मेजर शैतान सिंह छात्रावास फलोदी, श्री सरस्वती स्कूल सेतरावा, श्री आदर्श स्कूल देचू, बाप और तिवरी में कार्यक्रम आयोजित हुए। युवा नेता आजाद सिंह शिवकर के बाड़मेर स्थित कार्यालय में भी पूज्य तनसिंह जी की जयंती मनाई गई जिसमें बाड़मेर के सर्वसमाज के गणमान्य लोग उपस्थित रहे। आजाद सिंह ने कार्यक्रम में पूज्य श्री तन सिंह जी के प्रेरणास्पद जीवन के बारे में बताया। कार्यक्रम में वरिष्ठ अधिवक्ता बलवंत सिंह चौधरी, धनाऊँ प्रधान शम्मा बानो, रावणा राजपूत समाज अध्यक्ष गोरधन सिंह, मुसलिम इंतजामिया कमेटी के हारून कोटवाल, नवल किशोर लीलावत, गोस्वामी समाज अध्यक्ष खेतगिरी, जाँगिड समाज उपाध्यक्ष मदन लाल, समाजसेवी भूराराम भील, दलित विचारक भँवर लाल जेलिया सहित अनेक प्रबुद्ध जनों ने पूर्व सांसद तनसिंह जी को शब्दांजलि अर्पित की। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में युवा व शहर के गणमान्य लोग उपस्थित रहे। जालम सिंह मीठडा ने कार्यक्रम का संचालन किया। राजसमंद में जावद के अमरनाथ मंदिर प्रांगण में भी समारोह पूर्वक जयंती मनाई गई जिसमें दीपसिंह ऊलपूरा फार्म ने तन सिंह जी का जीवन परिचय दिया। भगवत सिंह देवली , निर्भय सिंह मदारा,भंवर सिंह फतहपूरा, हेमन्त नाथ उलपुरा सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। मातृशक्ति ने भी उपस्थित रहकर पूज्य श्री को श्रद्धांजलि दी। किशनगढ़ (अजमेर प्रांत) के श्री जगदंबा बाल विद्या मंदिर विद्यालय में भी जयंती मनाई गई। अजमेर प्रांत प्रमुख विजयराज सिंह जालियां ने पूज्य श्री का जीवन परिचय व श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना से लेकर अभी तक की यात्रा से समाज बंधुओ को अवगत कराया। कार्यक्रम में किशनगढ़ क्षेत्र के गांवों से सैकड़ों समाजबंधुओ व मातृशक्ति ने भाग लिया। उदयपुर में बेमला ग्राम पंचायत के सुरों का गुडा के मुख्य चौराहे पर भी कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें मेवाड वागड संभाग प्रमुख भंवर सिंह बेमला ने पूज्य श्री और संघ के बारे में विस्तार से बताया। बेमला सरपंच भरत मीणा, सुरों का गुडा के तेज राम पटेल सहित बेमला, भेकडा, वानु, नवल सिंह जी का गुडा, कियावतो का फला आदि गांवों से समाजबंधु उपस्थित रहे। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

पुणे

आकोली

वल्लभीपुर

सावर में मनाई महाराज गोकुलदास जी की जयंती

अजमेर जिले के सावर स्थित गढ़ के दरबार हॉल में श्रद्धेय महाराज श्री गोकुलदास जी शक्तावत की 437वीं जयंती समारोह पूर्वक मनाई गई। 22 जनवरी को आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए पूर्व राज्यसभा सांसद ओंकार सिंह लखावत ने कहा कि महाराजा गोकुलदास सच्चे क्षत्रिय थे। उनकी दानवीरता जगत प्रसिद्ध है। उनके बारे में कहा जाता है कि वे प्रतिदिन 51 बीघा भूमि दान करने और गायों की सेवा करने के पश्चात ही भोजन ग्रहण करते थे। हमें अपने ऐसे महान पूर्वजों से प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने गोकुलदास जी का विस्तृत इतिहास बताया और उनकी वीरता की गाथाएं सुनाई। समारोह की अध्यक्षता करते हुए पूर्व प्रधान भूपेंद्र सिंह शक्तावत ने कहा कि शक्तावत वंश में जन्मे गोकुलदास जी अपने महान कार्यों से इतिहास में अमर हो गए। उनके महान गुणों के कारण ही हम आज उन्हें स्मरण कर रहे हैं। विशिष्ट अतिथि श्रीपाल शक्तावत ने अपने संबोधन में कहा कि जिन महापुरुषों की वीर गाथाएं हमें प्रेरित करती हैं, उनके बारे में केवल जानना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि उनके बताए मार्ग पर चलना भी आवश्यक है। शक्ति सिंह बांदीकुई, कृष्णवर्धन सिंह गुढ़ा गौड़जी, सुमेर सिंह, विक्रम सिंह, सत्येंद्र सिंह और शैलेंद्र सिंह ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। सावर सरपंच विश्वजीत सिंह शक्तावत ने गोकुलदास जी की स्मृति में एक विशाल पैनोरमा बनाने की घोषणा की। कार्यक्रम के दौरान अनेक गणमान्य समाज बंधु उपस्थित रहे।

गणतंत्र दिवस पर शहीद राजेंद्र सिंह मोहनगढ़ को दी श्रद्धांजलि

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर ने गणतंत्र दिवस पर जैसलमेर जिले के मोहनगढ़ पहुंचकर संघ के स्वयंसेवक शहीद वीर राजेंद्र सिंह मोहनगढ़ को श्रद्धांजलि अर्पित की।

उन्होंने कहा कि हमारे पूर्वजों ने जो त्याग और बलिदान की परंपरा स्थापित की है, उसी का अनुसरण करते हुए शहीद राजेंद्र सिंह ने हमें गौरव प्रदान किया है। उनके इस बलिदान की स्मृति सदैव अक्षुण्ण रहेगी। संरक्षक श्री ने बताया कि राजेंद्र सिंह प्रारंभ से ही प्रतिभाशाली युवा थे। उन्होंने संघ के कई प्रशिक्षण शिविरों में भाग लिया था। वे अंतिम बार ड्यूटी पर जाने से पूर्व भी आशीर्वाद लेने आए थे। इस दौरान संभाग प्रमुख तारेंद्र सिंह झिनझिनयाली, पुंजराज सिंह देवडा, डॉ जालम सिंह अग्रोहा, महिपाल सिंह, भोजराज सिंह तेजमालता, हरि सिंह सनावड़ा, हिंदू सिंह म्याजलार, चन्द्रवीरसिंह हमीरा, पपू सिंह बालाना आदि स्थानीय स्वयंसेवक व समाजबंधु उपस्थित रहे। सभी ने शहीद की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। इससे पूर्व जैसलमेर स्थित संभागीय कार्यालय तनाश्रम में माननीय संरक्षक श्री की उपस्थिति में गणतंत्र दिवस भी मनाया गया। संरक्षक श्री द्वारा कार्यालय पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया।

संघशक्ति में रक्तदान शिविर का आयोजन

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य श्री तनसिंह जी की 99वीं जयंती के उपलक्ष्य में 22 जनवरी को संघ के आनुषंगिक संगठन श्री प्रताप युवा शक्ति द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन संघ के केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति, जयपुर में किया गया। वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह जी सरवड़ी एवं माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास के सान्निध्य में आयोजित शिविर में एसएमएस हॉस्पिटल, स्वास्थ्य कल्याण, एसके सोनी और मानव सेवा संस्थान के ब्लड बैंक शामिल रहे। सभी युवाओं ने रक्तदान में उत्साह पूर्वक भाग लिया।

मातृशक्ति ने भी रक्तदान किया। विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधि और राजनैतिक दलों के पदाधिकारी भी इस दौरान मौजूद रहे एवं रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन किया। जयपुर संभाग प्रमुख राजेंद्र सिंह बोबासर व श्री प्रताप युवा शक्ति के गजेंद्र सिंह बरवाली सहयोगियों सहित उपस्थित रहे एवं व्यवस्था का जिम्मा संभाला।

हैदराबाद में प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न

दक्षिण भारत में श्री क्षत्रिय युवक संघ के बढ़ते हुए विस्तार के क्रम में हैदराबाद के अमृतधाम, सुधांशु जी महाराज आश्रम में संघ का एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 13 से 15 जनवरी तक आयोजित हुआ। शिविर का संचालन पवन सिंह बिखरणिया ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ गीता में वर्णित कर्मयोग के व्यावहारिक अभ्यास का मार्ग है। शिविर की विभिन्न गतिविधियों यथा - चर्चा, सहगीत, खेल आदि के माध्यम से श्री क्षत्रिय युवक संघ हमारे जीवन

में निखार लाता है। हमने अपने जीवन के तीन दिन यहां दिए हैं तो इस समय को व्यर्थ नहीं जाने दें। यहां जो कुछ भी सिखाया जा रहा है उसे अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें तो ही हमारा दिया हुआ समय सार्थक होगा। शिविर में हैदराबाद, विजयवाड़ा, बेंगलुरु, मुंबई, पुणे, चेन्नई, गुजरात और राजस्थान के 185 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। राजस्थान राजपूत संघ हैदराबाद-सिकंदराबाद के सदस्यों ने व्यवस्था में सहयोग किया।

हर्षोल्लास से मनाई राव चांपा जी की 610वीं जयंती

चांपावत राठौड़ वंश के पितृ पुरुष राव चंपा जी की 610वीं जयंती जोधपुर जिले के बिलाड़ा तहसील के कापरडा गांव में 24 जनवरी को हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। गांव में स्थित वीर शिरोमणि चांपा जी के समाधि स्थल पर नवनिर्मित छतरी पर पूजन-अर्चन करके सभी ग्रामवासियों व समाजबंधुओं ने उनके प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की। संस्कृति एवं प्रोन्नति न्यास के पूर्व अध्यक्ष ओंकार सिंह लखावत ने चांपावत शाखा द्वारा हमारे गौरवपूर्ण इतिहास में दिए गए योगदान के बारे में बताया और कहा कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इतिहास के क्षेत्र में नवीन शोध को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। उदय सिंह रणसी गांव ने राव चांपा जी के वीर व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। चांपावत प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष सवाई सिंह रणसी गांव ने बताया कि राव चांपा के स्मारक पर उनकी अश्वारूढ़ प्रतिमा स्थापित की जाएगी तथा एक भव्य स्वागत द्वार का निर्माण भी किया जाएगा। रतन सिंह चांपावत ने कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम में चांपावत शाखा के 50 से अधिक गांवों से आए समाज बंधुओं ने अपने पूर्वज को पुष्पांजलि अर्पित की। जोधपुर के पीलवा में भी चांपा जी की जयंती मनाई गई। मदन सिंह नाहर नगर ने चांपा जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में बताया। छोटू सिंह, गोपालसिंह, अमरेन्द्र सिंह, फतेहसिंह, युवराज सिंह, स्वरूप सिंह, महेन्द्र सिंह, नरपत सिंह आदि ने भी अपने विचार रखे।

संपादकीय

युवाशक्ति के दिशा-दर्शन से तय होगा समाज का भविष्य

किसी भी समाज अथवा राष्ट्र की दिशा को तय करने वाली कार्यशक्ति उसकी युवाशक्ति की उमड़ती हुई ऊर्जा में निहित होती है। सामाजिक जीवन की श्रृंखला में वर्तमान पीढ़ी की युवा ऊर्जा की दिशा ही यह तय करती है कि समाज अपनी पिछली स्थिति से उत्थान की ओर बढ़ेगा या पतन की ओर। राष्ट्र के साथ भी यही बात है। दुर्भाग्य से आज के आर्थिक युग में सरकारें, नीति निर्मात्री संस्थाएं, बाजारीकरण की शक्तियां आदि इस युवा ऊर्जा को केवल अर्थतंत्र को गति देने वाले ईंधन के रूप में ही देखते हैं किंतु यह इस ऊर्जा के वास्तविक प्रभाव का गौण पक्ष ही है। समाज की युवा शक्ति की दिशा का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रभाव तो समाज के सांस्कृतिक, धार्मिक और नैतिक जीवन पर पड़ता है इसीलिए युवा शक्ति की ऊर्जा का सही दिशा में गतिमान होना आवश्यक है। लेकिन आज चारों ओर दृष्टिपात करें, तो यही दिखाई देता है कि समाज की युवा शक्ति अपरिपक्वता, दिशाहीनता और नकारात्मकता की शिकार होकर समाज को कमजोर करने में प्रयुक्त हो रही है। ऐसे में समाज की क्रियाशील शक्ति - हमारे युवाओं को कुछ बातों को ठीक से समझना और समझाना अत्यंत आवश्यक है ताकि उनकी ऊर्जा समाज के हित में प्रयुक्त हो न कि उसके विरुद्ध।

पहली बात जो समझनी आवश्यक है, वह है - समाज हमारा कुटुंब है, राजनीति का अखाड़ा नहीं। इसलिए समाज के प्रति हमारा व्यवहार ऐसा ही होना चाहिए जैसा परिवार के एक सदस्य का अपने परिवार के प्रति होता है। आज अनेक ऐसे व्यक्ति हमें अपने आसपास मिल जाएंगे जो समाज को कोस कर, उसे मूर्ख घोषित कर अपने आपको महान समाजसेवी सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। उनकी शिकायत होती है कि हम तो समाज का कल्याण करना चाहते हैं लेकिन यह समाज ही ऐसा है कि यह अपने हित की बात नहीं मानता। वे लोग समाज की विराटता और महानता को भूलकर केवल अहंकार में जीते हैं और उसी में विलीन हो जाते हैं। इसलिए युवाओं को इस बात को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि जो गाल बजाकर समाज का मालिक बनने का प्रयास करता है उसे समाज का समर्थन और स्नेह कभी प्राप्त नहीं होता, बल्कि जो समाज को पूज्य मानकर उसकी सेवा करता है, उसी के साथ समाज चलने को उद्धत होता है। आलोचनाओं और छिद्रान्वेषण से कुटुंब नहीं चला करते, केवल दूसरे को नीचे गिरा कर खुद ऊपर चढ़ने की राजनीति चल सकती है। इसलिए युवा आलोचना और छिद्रान्वेषण के मार्ग से दूर रहकर सहनशीलता, त्याग और प्रेम के साथ समाज में कार्य करें क्योंकि इन्हीं से कोई कुटुंब स्थाई बनता है।

दूसरी बात है - वैयक्तिक प्रयासों को सातत्य की कड़ी बनाएं। समाज की सेवा के लिए हम जो कुछ कृत्य करते हैं, वे सामाजिक जीवन को प्रभावित तभी कर सकते हैं जब वे हमारी व्यक्तिगत सीमाओं को पार कर सामूहिक रूप लें। श्रेष्ठ मार्ग तो यही है कि पहले से इस प्रकार के जो सत्यनिष्ठ प्रयत्न चल रहे हैं, हम भी अपने प्रयासों को उनके साथ समायोजित करने का प्रयास करें तो स्वतः ही हमारे प्रयासों का सातत्य बन जाएगा। यही सामाजिक संगठन का आधार है। दूसरा उपाय यह हो सकता है कि हम अपने मार्ग पर दृढ़ता पूर्वक डटे रहें और हमारे संकल्प को दूसरों का भी संकल्प बनाकर उन्हें भी अपने मार्ग पर चलाएं। यह अत्यंत कठिन उपाय है और केवल महापुरुषों से ही यह संभव है। विडंबना यह है कि आज हममें से अधिकांश अपने को महापुरुष ही मानकर चलते हैं। इसलिए किसी श्रृंखला की कड़ी बनने की बजाय हम समाज का हृदय जीते बिना मात्र सुझावों और आलोचनाओं से समाज के दिशा-दर्शक बनना चाहते हैं। यह दूसरा उपाय हमारे लिए है या नहीं इसका एक सरल सा परीक्षण यह है कि यदि हमारे भीतर यह शिकायत का भाव है कि समाज हमारी बात को नहीं समझता है और हमारी बात नहीं मानता है तो इसका अर्थ है कि हमारा मार्ग गलत है और जिसे हम अपना ज्ञान समझ रहे हैं, वह वास्तव में हमारा अहंकार ही है। ऐसे में पहले उपाय को अपनाकर अपने आपको सामाजिक एकता की श्रृंखला में एक कड़ी बनाने का भाव कहीं अधिक श्रेयस्कर और स्तुत्य है।

तीसरी बात है - नकारात्मकता आत्मभक्षी अग्नि है जिसमें व्यक्ति की समस्त क्षमताएं जलकर नष्ट हो जाती है। इसलिए नकारात्मकता को कभी भी अपने व्यक्तित्व पर हावी नहीं होने दें और न ही किसी अन्य की नकारात्मकता के प्रसार में अपना उपयोग होने दें। ये समाज, ये राष्ट्र, ये संस्कृति ही नहीं ये संपूर्ण संसार हमारा है और इसके रक्षण का दायित्व ही हमारा क्षात्रधर्म है। हमारे पूर्वजों ने कभी किसी जाति, पंथ, वर्ग को अपना शत्रु नहीं माना बल्कि केवल विष तत्व अर्थात नकारात्मकता को ही नष्ट करने के लिए संघर्षरत रहे, चाहे वह विष तत्व का धारक किसी भी जाति या संप्रदाय से हो। इसलिए आज के समय में यदि कोई यह बात करता है कि अमुक जाति अथवा संप्रदाय हमारा शत्रु है तो वह न केवल अपनी नकारात्मकता को हमारे भीतर फैला रहा है बल्कि क्षात्रधर्म के भी विरुद्ध कार्य कर रहा है। स्मरण रखें कि नकारात्मकता का उद्गम हमारे अज्ञान में हैं। यदि हमारा चिंतन सत्य की गहराइयों तक पहुंचने लगे तो स्वतः ही हमारा अज्ञान समाप्त होता है और हमारी नकारात्मकता भी नष्ट होने लगती है। इसलिए अपने चिंतन को अधिक से अधिक गहरा बनाने का प्रयत्न करते रहें।

पूज्य श्री तन सिंह जी ने हमें श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में एक ऐसा मार्ग दिया है जो हमारे समाज की युवाशक्ति को उपरोक्त तीनों मापदंडों पर खरा उतरकर समाज, राष्ट्र और मानवता की सच्ची सेवा में नियोजित होने का अवसर उपलब्ध करवाता है। संघ में पूज्य श्री तनसिंह जी ने वह पारिवारिक भाव भी भरा है जो पूरे समाज को एक कुटुंब मानकर उसकी सेवा के लिए त्याग और तपस्या की शिक्षा देता है तो हमें संघबद्ध करके हमारे व्यक्तिगत प्रयासों को सातत्य की श्रृंखला में भी जोड़ता है, साथ ही हमारे अज्ञान को नष्ट कर हमारी नकारात्मकता को भी समाप्त करता है। इसलिए आएं, हम स्वयं भी इस मार्ग पर चलें और समाज के युवाओं को भी इस मार्ग पर चलने को प्रेरित करें।

दम्पति यात्रा

श्री क्षत्रिय युवक संघ की दम्पति यात्रा रेल द्वारा सात जनवरी को जगन्नाथपुरी (उड़ीसा) के लिए जयपुर से प्रारम्भ हुई। गुजरात से आने वाले अन्य मार्ग में पुरी के लिए रवाना हुए। 9 जनवरी को 257 लोग पुरी पहुंच चुके थे। संघ के संरक्षक श्री पहले ही पुरी पहुंच गए थे। सायंकाल पुरी के गोवर्धन पीठ शंकराचार्य मठ के दर्शन किए एवं शंकराचार्य जी महाराज निश्चलानन्द सरस्वती का प्रवचन सुना। उसके बाद सभी ने जगन्नाथ भगवान के भव्य मंदिर में कृष्ण, बलराम एवं उनकी बहन सुभद्रा के श्रीमूर्ति के दर्शन किए। ये मूर्तियां लकड़ी से निर्मित है। इस सुन्दर मंदिर को 12वीं सदी में कलिंग राजा अनन्तबर्मन चौड़ गंगदेव ने बनवाया था। दूसरे दिन प्रातः समुद्र (बंगाल की खाड़ी) में स्नान कर वहीं सामूहिक हवन किया। दिन में बाजार में खरीदारी की गई। सायं 45 किलोमीटर दूर कोणार्क के सूर्य मंदिर को देखने गए। 13वीं सदी में इस मंदिर को गंगवंश के राजा नरसिंह देव प्रथम ने बनवाया था जो युनेस्को की विश्व धरोहर है। मंदिर पर आक्रांताओं एवं प्रकृति के प्रहार के उपरान्त भी इसके सुन्दर भव्य अवशेष विद्यमान है। यहां पर म्युजियम को भी देखा।

तीसरे दिन समुद्र स्नान किया एवं 70 किलोमीटर दूर उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर को प्रस्थान किया। वहीं नन्दन कानन जन्तुआलय में विभिन्न प्रकार के जानकारों एवं पक्षियों की क्रीड़ाओं का अवलोकन किया। साथ उड़ीसा कला संग्राहलय देखकर वहां की वास्तविक जीवन शैली, संस्कृति व सभ्यता का दर्शन अनुभव किया। यहां सभी का वहां के अधिकारियों द्वारा उड़ीसा का प्रसिद्ध दुपट्टा ओढाकर बहुमान किया गया। रात्रि में 11वीं सदी में बने प्रसिद्ध लिंगराज शिव मंदिर के दर्शन किए। इस मंदिर को सोमवंशीय राजा यथाति केशरी ने बनवाया था। यह कलिंग शैली में निर्मित भव्य मंदिर है। इस परिसर में कुल 108 मंदिर विद्यमान है। पुरी एवं भुवनेश्वर यात्रा में उड़ीसा केडर के आई.ए.एस. अधिकारी बलवन्तसिंह जी कालेवा (बाड़मेर) एवं उनकी अर्धांगिनी श्रीमती विष्णु कंवर जी झाझड़ का आतिथिय प्रेम व सहयोग सराहनीय रहा। पुरी में इन्हीं के कारण जगन्नाथ भगवान के विशेष प्रसाद अन्नकूट बालयोग को हमारे विश्राम स्थान पर लाकर जीमण कराया गया। यह मिट्टी के सात घड़े एक ऊपर एक रखकर पकाया जाता है। सबसे पहले ऊपर के घड़े का अन्न पकता है। फिर उसके नीचे और नीचे का।

भुवनेश्वर से देर रात्रि रवाना होकर 12 जनवरी सायं उत्तरप्रदेश के मिर्जापुर जिला अन्तर्गत स्वामी अड़गड़ानन्दजी महाराज के परमहंस आश्रम शक्तिगढ़ पहुंचे। भव्य सुन्दर आश्रम सभी के आतिथ्य को आतुर था। 13 जनवरी को स्वामी जी बरचर (मध्यप्रदेश) आश्रम से सभी को दर्शन लाभ देने विशेष विमान से आश्रम पधारे। इससे पहले दिन में कई भक्तजन बनारस में काशी विश्वनाथ मंदिर एवं गंगा घाट दर्शन तथा बौद्ध स्थली सारनाथ जाकर आए। मकर संक्रांति के दिन 14 जनवरी को प्रातः स्वामीजी का दर्शन, प्रवचन तथा प्रसाद ग्रहण कार्यक्रम हुआ। स्वामीजी सभी को राजस्थानी वेशभूषा एवं संघ गणवेश में पाकर अति प्रसन्न हुए। स्वामीजी के आशीर्वाद से दम्पतियों को दुपट्टा ओढ़ाकर धन्य कर दिया। शक्तेषगढ़ से कई भक्तगण प्रयाग राज में त्रिवेणी संगम पर मकर संक्रांति के दिन पावन स्नान करने गए तथा कुछ लोग सीधे प्रयागराज रेलवे स्टेशन पहुंचे। जहां रात्रि मध्य जयपुर के लिए प्रस्थान करना था। 15 जनवरी को दोपहर बाद तीन बजे जयपुर पहुंचकर सभी बन्धु अपने-अपने गंतव्यों को लौट गए। यात्रा का सभी ने आनन्द एवं आध्यात्मिक, धार्मिक लाभ लिया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक श्री श्रद्धेय भगवान सिंह जी एवं संघ प्रमुख श्री माननीय लक्ष्मणसिंह जी का सानिध्य सामिप्य यात्रा में सभी के लिए उत्साहवर्धक व महत्वपूर्ण रहा। यात्रा के लिए ब्रजराज सिंह खारड़ा एवं जितेन्द्रसिंह देवली का सराहनीय सहयोग एवं मार्गदर्शन रहा। यह यात्रा जयपुर से जयपुर तक नौ राज्य राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, झारखण्ड, पश्चिमी बंगाल, बिहार एवं उत्तरप्रदेश में होकर गुजरी।

- स्वरूपसिंह जिंजनियाली

नागौर, चित्तौड़गढ़ व पाली जिला समिति की वार्षिक बैठक संपन्न

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की नागौर जिला समिति की दो दिवसीय वार्षिक कार्ययोजना बैठक 21-22 जनवरी को खींवसर फोर्ट में आयोजित हुई। श्री क्षत्रिय युवक संघ के नागौर संभाग प्रमुख शिम्भू सिंह आसरवा के निर्देशन में फाउंडेशन द्वारा जिले में वर्ष भर में किए जाने वाले कार्यों हेतु योजना बनाई गई। फाउंडेशन की केंद्रीय परिषद के सदस्य जयसिंह सागू बड़ी ने 7-8 जनवरी को जयपुर में आयोजित केंद्रीय परिषद की वार्षिक बैठक में निश्चित की गई कार्य योजना के बारे में बताया। चर्चा के दौरान पूज्य श्री तन सिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष में जिले में आयोजित होने वाले सभी कार्यक्रमों में फाउंडेशन के सदस्यों द्वारा सक्रिय भूमिका निभाने की बात कही गई। बैठक के दूसरे दिन धनंजय सिंह खींवसर ने भी बैठक में सम्मिलित होकर चर्चा में भाग लिया। इसी प्रकार पाली जिला समिति की वार्षिक बैठक भी 22 जनवरी को पाली शहर में आयोजित हुई। श्री क्षत्रिय युवक संघ के पाली प्रांत प्रमुख महोब्बत सिंह धींगाणा के निर्देशन में संपन्न बैठक में फाउंडेशन के पाली जिला प्रभारी अजय पाल सिंह गुड़ा पृथ्वीराज ने केंद्रीय परिषद की बैठक में निश्चित बिंदुओं के आधार पर पाली जिले की कार्ययोजना सामने रखी। वरिष्ठ स्वयंसेवक हीर सिंह लोडता ने 25 जनवरी को पाली शहर में आयोजित होने वाले पूज्य श्री तनसिंह जयंती कार्यक्रम के संबंध में चर्चा की। बैठक में उपस्थित सहयोगियों ने तहसील स्तर पर मार्च 2023 तक किए जाने वाले कार्यों का लक्ष्य लिया। 28 जनवरी को चित्तौड़गढ़ जिला समिति की बैठक शहर स्थित महाराणा भूपाल पब्लिक स्कूल में आयोजित हुई। संघ के केन्द्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली की उपस्थिति में संपन्न कार्यक्रम में फाउंडेशन के जोगेंद्र सिंह छोटा खेड़ा ने पिछले वर्ष में किए गए कार्यों का संक्षिप्त ब्यौरा प्रस्तुत किया। साथ ही आगामी आने वाले वर्ष 2023 की कार्य योजना के बारे में उपस्थित सहयोगियों को अवगत कराया और बताया कि चित्तौड़गढ़ जिले की सभी तहसीलों में सभी स्तरों पर राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय क्षत्रिय बंधुओं की एक बैठक अप्रैल माह में जयपुर में आयोजित की जाएगी।इसके लिए तहसील अनुसार दायित्व भी सौंपे गए। शिक्षा, कृषि, अधिवक्ता, फाइनेंस आदि क्षेत्रों से जुड़े सहयोगियों में आपसी सामंजस्य बढ़ने के लिए भी बैठक आयोजित करने का निर्णय हुआ। बैठक में दिलीप सिंह रूद, हर्षवर्धन सिंह रूद, उदय सिंह सिंघोला, नरेंद्र सिंह लाखा का खेड़ा, मंगल सिंह झाडोली, पुष्पेंद्र सिंह चोथापूरा, सूर्य कर्ण सिंह अकोलागढ, नरपत सिंह भाटी, गजराज सिंह बराडा, श्याम सिंह हाडा की मोरवन, लोकपाल सिंह डेट, गोविंद सिंह झाडोली, सत्यवीर सिंह दगला का खेड़ा, अचल सिंह भाइयों का खेड़ा, युवराज सिंह भाटियों का खेड़ा, भूपेंद्र सिंह डगला का खेड़ा, टीकम पाल सिंह घटियावली, जयपाल सिंह घटियावली, डॉ विमल सिंह सोलंकी, कुलदीप सिंह चंद्रावत, रूपेश सिंह नरूका आदि सहयोगी उपस्थित रहे।

खिरोड़ में सामाजिक सौहार्द की पहल

झुंझुनू जिले के नवलगढ़ तहसील के खिरोड़ गांव में राजपूत समाज द्वारा सामाजिक सौहार्द की मिसाल पेश करते हुए वाल्मीकि समाज के लोगों को सम्मान सहित अपने घर बुलाकर भोजन करवाया गया तथा परंपरा अनुसार उन्हें आभूषण आदि भेंट किए गए। गांव के स्वर्गीय लादू सिंह शेखावत की स्मृति में यह आयोजन किया गया। इस दौरान उपस्थित सर्व समाज के लोगों ने राजपूत समाज की इस पहल की सराहना करते हुए आपस में मिलजुल कर रहने की बात कही।

वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप को दी श्रद्धांजलि

19 जनवरी को वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की पुण्यतिथि पर ओसियां स्थित महाराजा श्री गजसिंह शिक्षण संस्थान में श्रद्धांजलि कार्यक्रम रखा गया जिसमें उपस्थित समाजबंधुओं ने स्वतंत्रता और स्वाभिमान के अमर प्रतीक महाराणा प्रताप के संघर्ष और बलिदानों को स्मरण करते हुए उनके प्रति श्रद्धा प्रकट की। बेदु में भी कार्यक्रम आयोजित करके महाराणा प्रताप को श्रद्धांजलि दी गई।

समारोह पूर्वक मनाई वीर आलाजी की जयंती

जैसलमेर स्थित शीशगंज मंदिर में वीर छत्रपति आलाजी की जयंती 27 जनवरी को समारोह पूर्वक मनाई गई। ख्याला मठ के मठाधीश महंत श्री गोरखनाथ जी व आसरी मठ की योगिनी धनियानाथ की उपस्थिति में संपन्न कार्यक्रम में शहर के साथ ही ग्रामीण क्षेत्र से भी लोग उपस्थित रहे। आलाजी सेवा समिति के सुजान सिंह सलखा द्वारा झुंझार का जीवन परिचय प्रस्तुत किया गया। केसर सिंह द्वारा कार्यक्रम की भूमिका बताई गई व प्रताप राम सुथार द्वारा छंद का वाचन किया गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के जैसलमेर सम्भाग प्रमुख तारेंद्र सिंह झिंझनियाली ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा प्रथम बार आलाजी की जयंती पर कार्यक्रम आयोजित किया गया था, उसके बाद लगातार कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं। इससे हमारी भावी पीढ़ी को पूर्वजों के इतिहास की जानकारी मिल पाती है। हम भाग्यशाली हैं कि हमने जैसलमेर जैसी गौरवशाली धरती पर जन्म पाया है। सुनीता भाटी व पूर्व विधायक छोटू सिंह ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया।

छत्रपति वीर श्री आलाजी का संक्षिप्त जीवन परिचयः यदुकुल में प्रतापी भाटी वंश की नवमी राजधानी जैसलमेर रही है। इसी वंश के जंज कुल में छत्रपति वीर श्री आलाजी जंज का जन्म कनोई गांव के भाणसी जी जंज के घर हुआ। विक्रम संवत् 1607 में महारावल लूणकरण जी के समय कंधार के शहजादे अमीर अली ने विश्वास घात करके दुर्ग पर कब्जा कर लिया। इस संकट की घड़ी में जैसलमेर के किले में आपात बैठक हुई, जिसमें जैसलमेर के वीर योद्धा आला जी का नाम तय किया गया। राईके के साथ तुरंत संदेश भिजवाया गया। हालांकि इस संकट का आलाजी को पहले ही भान हो गया था। आलाजी अपने गुरू वीरनाथ जी को याद कर भूंगरे घोड़े पर सवार होकर जैसलमेर किले के द्वार पर तुरंत पहुंच गए, पर किले के द्वार बंद थे। कहते हैं कि आलाजी के घोड़े ने पोल के ऊपर से छलांग लगाई व महल में पहुंच कर भाटी राजकुमार श्री माल देव जी व भाटी सिरदारों व दरबारियों से मिले। संकट से भाटी कुल को उबारने का बीड़ा उठाया। राजकुमार माल देव जी के हाथों जैसलमेर राज्य का मेघाडंबर छत्र वीर आलाजी को धारण करवाया गया। छत्रपति वीर श्री आला जी ने अपनी तलवार के बल पर आक्रमणकारियों को खदेड़ते हुए ईसाल बंगला के पास पहुंचे तो आला जी का शीश धड़ से अलग हो गया। गुरू वीर नाथ के दिए वचनानुसार उनकी छाती में आंखे खुल आयी व बिना सिर के पाकिस्तान के देरावर तक लड़े। जहां आज भी लोग उन्हें मोडिया पीर के नाम से जानते है। धन्य है वीर आलाजी को जिन्होंने भाटी कुल जंज का नाम रोशन किया।

हम जहां हैं वहीं से काम शुरू करें: संरक्षक श्री

(पेज एक से लगातार)

मानवता की शिक्षा कहीं भी नहीं मिल रही है। यह शिक्षा कौन देगा? ऐसा तन सिंह जी ने अनुभव किया। तनसिंह जी ने इसके लिए दूसरे की प्रतीक्षा नहीं की। उनका कोई गुरु नहीं था, वे स्वयं ही अपने गुरु थे और इसीलिए वे लाखों लोगों के गुरु बन गए। जो स्वयं जागृत है वही दूसरों को मार्ग दिखा सकता है। जिसके पास धन है, वही दूसरों को दान दे सकता है, जिसके पास बल है वही दूसरों की रक्षा कर सकता है। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ सब प्रकार की शक्ति की उपासना कराता है। कर्म योग, ज्ञान योग और भक्ति योग का समन्वय हैं श्री क्षत्रिय युवक संघ में। संघ में आने वाले असंख्य लोगों ने इसको अनुभव किया है। श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य संसार के कल्याण की बात है। श्री क्षत्रिय युवक संघ का काम है अपने आप को बनाओ और संसार को बनने का मार्ग बताओ। लोक शिक्षण दो। ना कोई छोटा है, ना कोई बड़ा है। जातियां तो युगों से चल रही हैं। जाति कभी भी बुरी नहीं होती जातिवाद ही बुरा होता है। जो जातिवाद करता है वह ना नेता बनने के योग्य है, ना अधिकारी बनने के योग्य है। नेता वह है जो दूसरों को रास्ता दिखाए, अधिकारी वह है जो दूसरों के अधिकारों की रक्षा करे। वह सब क्षत्रिय का ही काम है।

पूज्य श्री तन सिंह जी की जन्मस्थली और उनके ननिहाल बेरसियाला में आयोजित इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने कहा कि जब-जब भी संसार अवनति के मार्ग पर बढ़ता है और चारों ओर ऐसी स्थिति बनती जाती है कि हम अपनी परंपरागत सनातन संस्कृति को ठोकर मारने को तैयार हो जाते हैं उस समय सदैव कुछ महापुरुष अवतरित होते हैं और उनका जीवन एक ही काम के लिए होता है कि संसार की निम्न स्तर की ओर जा रही गति को रोकें और उसे उर्ध्व गति की ओर मोड़ने का प्रयास करें। वैसे ही महापुरुष के रूप में हमारे समाज में आए तनसिंह जी, जिन्होंने केवल राजपूत समाज नहीं, केवल क्षत्रिय वर्ण नहीं बल्कि समस्त मानव जाति में जो नीचे की ओर बहने की प्रवृत्ति पनप रही है, उसको दूर करने के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। संघ केवल राजपूतों के लिए नहीं है, केवल भारत के लिए भी नहीं है, पूरी मानवता के लिए है। संघ की साधना के माध्यम से व्यक्ति न केवल सामाजिक, पारिवारिक और राष्ट्रीय व्यवस्था को सुधारता है बल्कि वह अंतरावलोकन करके अपना जीवन सुधारते हुए परमपिता की ओर बढ़ने का भी काम करता है। पूज्य तनसिंह जी ने संघ को व्यष्टि से समष्टि और समष्टि से परमेष्टि की ओर जाने का मार्ग बनाया। उन्होंने आगे कहा कि तनसिंह जी आज नहीं है फिर भी उनका लगाया हुआ पौधा लगातार बढ़ रहा है। संघ लगातार साधनामार्ग पर चल रहा है, लगातार लोग आ रहे हैं और संख्या बढ़ती जा रही है। ज्यादा से ज्यादा लोगों को साधना की ओर अग्रसर करके उनके जीवन को निखारित किया जा रहा है। उसका असर हमारे परिवार और समाज पर भी पड़ता है। पूज्य तनसिंह जी भौतिक रूप में आज नहीं है लेकिन हम सबके हृदय में वे बैठे हैं। उन्हीं की प्रेरणा से हम संघ के साथ जुड़ रहे हैं।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने कहा कि आज से लगभग एक शताब्दी पूर्व एक ऐसे युगपुरुष का जन्म हुआ जिन्हें हम आज तनसिंह जी के नाम से जानते हैं। ऐसे महापुरुष जब जन्म लेते हैं तब विधाता उनके लिए कष्ट, परिश्रम और साधना भी साथ में उत्पन्न करता है। यही पूज्य तनसिंह जी के जीवन में भी देखा जा सकता है। छोटी सी आयु में उनके पिता का देहांत हो जाना, उसके बाद उनकी शिक्षा, आजीविका और परिवार के भरण-पोषण का दायित्व संभालने में आई कठिनाइयों को हम सब जानते हैं। भगवान श्री राम, भगवान श्री कृष्ण को भी हम युगपुरुष के रूप में जानते हैं। उन्होंने धर्म और संस्कृति की रक्षा करने के लिए स्वयं मर्यादित जीवन जीकर संसार को भी मर्यादित होने का पाठ पढ़ाया। पूज्य तनसिंह जी ने भी इसी प्रकार का जीवन जिया। अपने विद्याध्ययन काल में ही उनको अपनी कौम, अपनी संस्कृति, अपने धर्म के पतन को देखकर चिंता हुई। चिंता तो हम भी करते हैं लेकिन हमें में और जो युगपुरुष होते हैं उनमें यह अंतर है कि वे चिंता के साथ चिंतन भी करते हैं। पूज्य तनसिंह जी ने भी अपने इतिहास, अपने धर्मशास्त्रों का अध्ययन करके समाज की वर्तमान स्थिति के प्रति चिंतन प्रारंभ किया। लेकिन वे केवल चिंतन करके ही नहीं रुके बल्कि उन्होंने एक ऐसा सांचा निर्मित किया जिससे हमारी कौम के युवाओं को इस प्रकार का प्रशिक्षण मिले कि वे इस सांचे में ढलकर अपने पूर्वजों के मार्ग पर चलने का प्रयास कर सकें। आज से 76 वर्ष पूर्व इसी सांचे के रूप में पूज्य श्री तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। पूज्य तनसिंह जी ने स्वयं उस मार्ग पर चलकर, वैसा जीवन जीकर दिखाया जैसा वे हमें बनाना चाहते थे। जो युगपुरुष होते हैं, वे विरोध अथवा आलोचनाओं की परवाह नहीं करते बल्कि अपने कर्म में रत रहते हैं। पूज्य तनसिंह जी ने भी ऐसा ही किया। संघप्रमुख श्री ने पूज्य श्री तनसिंह जन्म शताब्दी वर्ष के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि अगले वर्ष पूज्य श्री तन सिंह जी के जन्म को सौ वर्ष पूरे होने वाले हैं। पूज्य तनसिंह जी की जन्म शताब्दी देश की राजधानी दिल्ली में मनाई जाएगी जिसमें हम सभी को उसी प्रकार पहुंचना है जिस प्रकार हम जयपुर में आयोजित हीरक जयंती समारोह में पहुंचे थे। श्री क्षत्रिय युवक संघ आपका है, पूज्य तनसिंह जी भी हम सबके हैं। काम भी हमारा है और हमें ही करना है। हम अगले एक वर्ष को पूज्य श्री के जन्म शताब्दी वर्ष के रूप में मनाने वाले हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ में कार्य के दृष्टिकोण से पूरे देश में 16 संभाग बने हुए हैं। उन सभी संभागों में कुल मिलाकर सौ बड़े कार्यक्रम करने का निर्णय किया गया है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक संभाग में 100 छोटे-बड़े कार्यक्रम अलग से किए जाएंगे। इस प्रकार कुल 1700 कार्यक्रम होंगे। इसी प्रकार प्रत्येक प्रांत में पथप्रेरक व संघ शक्ति के 100-100 नए सदस्य शताब्दी वर्ष के दौरान बनाए जाएंगे। संघ-साहित्य के प्रसार हेतु भी विशेष अभियान चलाया जाएगा।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेविका एवं पूज्य तनसिंह जी की पुत्री जागृति बा हरदासकाबास ने कहा कि उस मां को कोटि कोटि वंदन है जिसने पूज्य तनसिंह जी जैसे युगपुरुष को जन्म दिया। बेरसियाला की इस भाग्यशाली धरती को भी कोटि-कोटि वंदन है जिसमें उस युगपुरुष ने जन्म लिया। ईश्वर नारी को विशेष शक्ति देता है, उसी शक्ति से पूज्य मां सा मोती कंवर जी ने विपरीत परिस्थितियों में भी तनसिंह जी का पालन पोषण किया और उन्हें ऐसे संस्कार दिए कि आज हम सब उनकी जयंती मना रहे हैं। मां निर्माता होती हैं। जो मां कर सकती हैं वह पिता नहीं कर सकता। गर्भधारण से लेकर बालक जब 15 वर्ष का होता है तब तक वह मां के ही इर्द-गिर्द रहता है। इसीलिए उसका सर्वाधिक प्रभाव संतान के व्यक्तित्व पर पड़ता है। स्त्री को ईश्वर ने त्याग की विशेष क्षमता दी है तभी वह अपना परिवार छोड़कर नए परिवार में आती है, उसे अपना बनाती है, अपना पूरा जीवन वहां बिताती है। इसी शक्ति से वह अपनी संतान को महान बना सकती है। यदि मां संकल्प करें तो राम और कृष्ण जैसे युगपुरुष आज भी जन्म ले सकते हैं। लेकिन हम अपना कर्तव्य भूल गई हैं। हम मां तो बनती हैं लेकिन हम अपने क्षत्रियोचित संस्कारों को भूलती जा रही हैं। उन संस्कारों को पुनः याद दिलाने के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ काम कर रहा है। इसलिए सभी माताओं से अनुरोध है कि अपनी बालिकाओं को संघ के शिविरों में भेजें। कार्यक्रम का संचालन ईश्वर सिंह बेरसियाल ने किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में संभाग प्रमुख तारेंद्र सिंह झिनझिनयाली द्वारा पूज्य तनसिंह जी का जीवन परिचय दिया गया। कार्यक्रम में महंत प्रताप पुरी त्रिलोकनाथ, जैसलमेर विधायक रूपाराम, जिला प्रमुख प्रताप सिंह रामगढ़, नाचना ठाकुर विक्रम सिंह, प्रधान तन सिंह, प्रधान जनक सिंह, पूर्व विधायक सांग सिंह, पूर्व विधायक छोटू सिंह, पूर्व विधायक शैतान सिंह, कांग्रेस नेत्री सुनीता भाटी, राजेन्द्रसिंह भिंयाड़, छुग सिंह, छोटू खंदारी, नसीब खान, जाम खेमेंद्र सिंह, सुरेंद्र सिंह बडोडा गांव, भंवर सिंह साधना, मंगल सिंह सिराना, खुमान सिंह, भाजपा जिलाध्यक्ष बाड़मेर स्वरूप सिंह खारा, पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष रविंद्र सिंह भाटी, पृथ्वी सिंह रामदेरिया, रेवंत सिंह झिंझनियाली, बाबू सिंह, हरि सिंह बेरसियाला, गंगा सिंह तेजमालता, पदम सिंह रामगढ़, गणपत सिंह अवाय सहित हजारों की संख्या में समाजबंधु उपस्थित रहे। मातृशक्ति ने भी उत्साह पूर्वक कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान पूज्य श्री तनसिंह जन्म शताब्दी वर्ष का आगाज भी किया गया। माननीय संरक्षक महोदय ने इस अवसर पर जन्म शताब्दी वर्ष के लोगो का अनावरण कर वर्ष 2023-2024 को पूज्य श्री तनसिंह जन्म शताब्दी वर्ष के रूप में मनाने की घोषणा की।

महाराजा कृष्णकुमार सिंह की स्मृति में कार्यक्रम आयोजित

सूरत की डांभा शाखा में 15 जनवरी को भावनगर के पूर्व महाराजा कृष्णकुमार सिंह की स्मृति में कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें स्वयंसेवकों तथा ग्रामवासियों ने उपस्थित रहकर देश के एकीकरण में महाराजा द्वारा की गई पहल को स्मरण करते हुए उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की। भवानी सिंह माडपुरिया ने महाराजा कृष्णकुमार सिंह का जीवन परिचय देते हुए बताया कि 15 जनवरी 1948 को सरदार पटेल के आग्रह पर भारत एकीकरण के यज्ञ में प्रथम आहुति के रूप में अपने रजवाड़े को अर्पित करने वाले महाराजा कृष्णकुमार सिंह ही थे। उन्होंने महाराजा की उत्तम शासन व्यवस्था एवं प्रजावत्सलता के बारे में भी बताया। कार्यक्रम में उपस्थित सभी स्वयंसेवकों व ग्रामवासियों ने पूर्व महाराजा को श्रद्धासुमन अर्पित किए।

सिवाना में संरक्षक श्री के सान्निध्य में स्नेहमिलन संपन्न

माननीय संरक्षक महोदय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर 17 जनवरी को सिवाना प्रवास पर रहे। इस दौरान आपके सान्निध्य में सिवाना के कल्ला रायमलोत राजपूत छात्रावास में स्नेहमिलन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में स्थानीय विधायक हमीर सिंह भायल सहित अनेकों गणमान्य समाजबंधु उपस्थित रहे।

माननीय संरक्षक श्री ने सभी का परिचय लिया और सामाजिक सद्भावना को बनाए रखने के लिए मिलकर कार्य करने का संदेश दिया। प्रवास के दूसरे दिन प्रातःकाल संरक्षक महोदय पूज्य तनसिंह जी के परिवार से मिलने सुन्दरिया बेरा भी पधारे।

(पृष्ठ दो का शेष)

देश भर में...

बीकानेर में लूणकरणसर के ग्राम बिंजरवाली में समारोह पूर्वक पूज्य श्री की जयंती मनाई गई। वरिष्ठ स्वयंसेवक भागीरथ सिंह जी सेरूणा ने पूज्य श्री तन सिंह जी के जीवन परिचय एवं संघ की कार्यप्रणाली के बारे में बताया। कार्यक्रम का संचालन नारायण सिंह कस्तूरिया ने किया। कार्यक्रम में बिंजरवाली, मुसलकी, मकड़ासर, सोढवाली, किस्तुरिया आदि गांवों से समाजबंधु उपस्थित रहे। नोखा कोलायत प्रांत में श्री करणी राजपूत छात्रावास नोखा में और मेडी का मगरा गाँव में जयंती कार्यक्रम आयोजित हुए। राजपूत सभा भवन छात्रावास बांसवाड़ा में भी जयंती मनाई गई। जयगिरीराज सिंह ने पूज्य श्री तन सिंह जी के जीवन परिचय के बारे में बताया एवं संघ का परिचय दिग्विजय सिंह ने दिया। मातेश्वरी विद्या मंदिर उच्च माध्यमिक विद्यालय भिंयाङ में भी कार्यक्रम रखा गया जिसमें विद्यार्थियों ने माटी से पू. तनसिंह लिखकर उस पर पुष्पांजलि अर्पित की। गुडामालानी प्रांत में बेसलानियों का तला बूठ में, दुर्गा महिला विकास संस्थान नाथावतपुरा, सीकर के बालिका छात्रावास में, सादुलपुर (चुरु) में, सबलपुरा (भीलवाड़ा) में, कोटा में, श्री शार्दुल छात्रावास पिलानी और श्री क्षत्रिय हरिश्चंद्र राजपूत छात्रावास झालावाड़ में भी कार्यक्रम आयोजित हुए।

मध्य गुजरात संभाग में भी विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित हुए। अहमदाबाद ग्राम्य प्रांत में काणेटी गांव में सुबह 5 बजे स्वयंसेवकों द्वारा प्रभात फेरी निकाली गई। इसके पश्चात श्री राम जी मंदिर में पुष्पांजलि कार्यक्रम रखा गया। श्री कर्णवीर युवा शक्ति काणेटी के सामाजिक कार्य में आर्थिक सहयोग व निःसहाय पशुओ को चारा खिलाया गया। काणेटी आदर्श प्राथमिक पाठशाला में विद्यार्थियों को तिथि भोजन कराया गया। श्री मुक्तेश्वर महादेव मंदिर चेखला में, श्री राजपूत समाज की ढाणी पीपण में, सीहोर में, श्री वाघेला समाज की ढाणी खोड़ा में और श्री रामजी मंदिर गोहिलशेरी, सानंद में भी कार्यक्रम आयोजित हुए। अहमदाबाद-गांधीनगर प्रांत में शाम लॉ गार्डन -अहमदाबाद में एवं चरोतर प्रांत में श्री ऋणनाथजी मंदिर वडोद में भी जयंती मनाई गई। उत्तर गुजरात संभाग के मेहसाना प्रांत के भैसाणा गांव में संघ के स्वयंसेवक वनराज सिंह भैसाणा के पुत्र विरेन्द्रसिंह के लग्न के दौरान पूज्य श्री की जयंती मनाई गई। पूज्य श्री का परिचय इन्द्रजीत सिंह जेतलवासणा ने दिया। संभाग प्रमुख विक्रमसिंह कमाना ने संघ के उद्देश्य और कार्यप्रणाली के बारे में बताया। हरपाल सिंह भैसाणा ने भी अपने विचार रखे। महाराष्ट्र संभाग के मुंबई प्रांत में गिरगांव चौपाटी, बोरीवली, भायंदर, मलाड, कल्याण, खारघर और तुर्भे में शाखा स्तर पर जयंती मनाई गई। भायंदर की मातृशक्ति शाखा में भी जयंती मनाई गई। सूरत प्रांत के सारोली मंडल के वीर अभिमन्यु उद्यान में 26 जनवरी को जयंती समारोह का आयोजन किया गया। कुलदीप सिंह बिखरनिया द्वारा श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय एवं भोपाल सिंह शामल द्वारा संघ के आनुषंगिक संगठनों का परिचय दिया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए दक्षिण गुजरात राजपूत समाज के अध्यक्ष प्रद्युमन सिंह जाडेजा ने कहा कि गुजरात में श्री क्षत्रिय युवक संघ सन् 1956 से निरंतर कार्यरत है एवं इस भागीरथी कार्य को आगे बढ़ाने के लिए समाज के हर व्यक्ति तक संघ की पहुंच हो ऐसी हमारी आशा है एवं हम इसके लिए निरंतर कार्यरत हैं। सूरत शहर प्रांत प्रमुख खेत सिंह चांदेसरा ने कहा कि पूज्य श्री का सपना है कि हर क्षत्रिय शिक्षित हो एवं अपने स्वधर्म का अनुसरण करते हुए जीवन व्यतीत करे। हमारे ऋषि-मुनियों ने भी क्षत्रिय के जीवन को सर्वोच्च माना है और संघ हमें वैसा ही जीवन जीना सिखा रहा है। उन्होंने जन्म शताब्दी वर्ष के बारे में भी जानकारी दी। जबर सिंह भियाड़ व केतन सिंह चलथान ने भी विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन भवानी सिंह माडपुरिया ने किया। कार्यक्रम के अंत में सभी बंधुओं को यथार्थ गीता वितरित की गई। गोहिलवाड संभाग में हालार प्रांत में वीरवार और शिशांग में 22 जनवरी को जयंती मनाई गई। पुणे प्रांत में 22 जनवरी को सामूहिक शाखा लगाकर पूज्य श्री की जयंती मनाई गई। वरिष्ठ स्वयंसेवक हनुमान सिंह बिखरणिया ने पूज्य श्री तन सिंह जी के जीवन के बारे में बताया और उनसे चिंतन, मनन और स्वाध्याय की प्रेरणा लेने की बात कही। हैदराबाद में भी 26 जनवरी को पूज्य श्री की जयंती मनाई गई। गुजरात के वल्लभीपुर और धंधुका में भी जयंती मनाई गई। उत्तर गुजरात संभाग के बनासकांठा प्रांत में वडगाम तहसील के लिबोई स्थित सरस्वती कॉलेज में 22 जनवरी को पूज्य श्री की जयंती मनाई गई। संभाग प्रमुख विक्रम सिंह कमाणा, वरिष्ठ स्वयंसेविका जागृति बा हरदासकाबास, प्रांत प्रमुख अजीत सिंह कुणघेर, गुमान सिंह माडका, सहदेव सिंह मूली व निशा बा लिबोणि ने कार्यक्रम को संबोधित किया और पूज्य श्री तन सिंह जी के जीवन से प्रेरणा लेकर समाज हेतु समर्पित होकर कार्य करने की बात कही। अवणिया शाखा में 27 जनवरी को पूज्य तनसिंह जी जयंती मनाई गई। केन्द्रीय कार्यकारी महेन्द्र सिंह पांची व मंगलसिंह धोलेरा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

(पृष्ठ एक का शेष)

योग्यता... 100वीं जयंती पर मुख्य कार्यक्रम देश की राजधानी दिल्ली में 28 जनवरी 2024 (रविवार)

को आयोजित करने का निर्णय लिया गया, जिसकी तैयारी के लिए आवश्यक बिंदुओं पर भी चर्चा की गई। बैठक के अंत में माननीय संरक्षक महोदय भगवान सिंह रोलसाहबसर एवं माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास का सान्निध्य भी प्राप्त हुआ।

संभागीय एवं प्रांतीय अर्धवार्षिक समीक्षा बैठकों का आयोजनः केंद्रीय अर्द्धवार्षिक समीक्षा बैठक में लिए गए निर्णय के अनुरूप विभिन्न संभागों और प्रांतों में भी समीक्षा बैठकें आयोजित करने का क्रम प्रारंभ हुआ। बाड़मेर संभाग की अर्द्धवार्षिक कार्य योजना बैठक 21 जनवरी को आलोक आश्रम (बाड़मेर) में माननीय संरक्षक श्री के सान्निध्य में संपन्न हुई। संरक्षक श्री ने उपस्थित स्वयंसेवकों से कहा कि समाज कार्य करते हुए पग पग पर सावधानी रखनी आवश्यक है। कोई भी ऐसा आग्रह नहीं स्वीकारें जिससे व्यवस्था भंग होती हो। उन्होंने कहा कि आप अपने कार्य से संतुष्ट नहीं हैं तो अकर्मण्यता छोड़कर क्रियाशील बनें और संघ के सहयोगी होने पर गर्व करें। बैठक में संभाग में इस सत्र में हुए कार्यों की समीक्षा की गई और आगामी लक्ष्य निर्धारित किए गए। संभागप्रमुख महिपाल सिंह चूली ने कहा कि संघ द्वारा हमें जो जिम्मेदारी दी जाती है, उसको पूर्ण निष्ठा के साथ निभाएं। हम सभी खुद का अवलोकन करें कि विगत छह माह में हमने कितना संघ कार्य किया है और जितना किया है क्या वह पर्याप्त है? बैठक के दौरान बेरसियाला में आयोजित होने वाले पूज्य श्री तनसिंह जयंती समारोह के संबंध में भी चर्चा हुई। बैठक में शिव, चौहटन, गुड़ामालानी और बाड़मेर शहर प्रांत के प्रांत प्रमुख व स्वयंसेवक सम्मिलित हुए। पाली प्रांत की अर्द्धवार्षिक समीक्षा बैठक 15 जनवरी को हनवंत सिंह गादेरी के राजेंद्र नगर, पाली स्थित आवास पर आयोजित हुई। प्रांत प्रमुख महोब्बत सिंह धींगाणा ने प्रांत में अब तक हुए कार्य के बारे में जानकारी देते हुए अगले छह माह की कार्ययोजना सामने रखी। बैठक के दौरान पूज्य श्री तनसिंह जी की 99वीं जयंती पर प्रांत स्तरीय कार्यक्रम पाली में आयोजित करने का निर्णय हुआ। पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के दौरान आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों के संबंध में भी चर्चा हुई। प्रांत के सभी मंडल प्रमुख स्वयंसेवकों सहित बैठक में उपस्थित रहे। इसी प्रकार सिरोही प्रांत की बैठक देवराज सिंह मांडानी के आवास पर आयोजित हुई। प्रांत प्रमुख ईश्वर सिंह सरण का खेड़ा ने स्वयंसेवकों से कहा कि संघ कार्य समाज की आवश्यकता है जिसे पूरा करने में हम सभी को अपनी पूर्ण क्षमता के साथ सहयोग करना है। बैठक में अब तक हुए कार्यों की समीक्षा के साथ ही आगामी कार्ययोजना की रूपरेखा तैयार करके स्वयंसेवकों को दायित्व सौंपे गए। बैठक में पूरे जिले से स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

पंकजसिंह...

सीमा सुरक्षा बल के महानिदेशक रहते हुए उन्होंने 2021 में सीमा सुरक्षा बल का स्थापना दिवस जैसलमेर में आयोजित किया। उनके इस नवाचार की सफलता से प्रभावित होकर सरकार ने अन्य अर्द्धसैनिक बलों और सेना को भी अपने स्थापना दिवस जैसे आयोजन दिल्ली से बाहर करने के लिए निर्देशित किया है।

हरसिद्धि माता मंदिर मूलाना में प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

जैसलमेर जिले की ग्राम पंचायत मुलाना में स्थित श्री क्षत्रिय युवक संघ के शाखा मैदान के निकट परमार वंश की कुलदेवी हरसिद्धि माताजी के नवनिर्मित मंदिर में प्रतिमा प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव 27-28 जनवरी को संपन्न हुआ। कलश स्थापना के साथ प्रारंभ हुए महोत्सव में गांव में शोभायात्रा निकाली गई व हवन किया गया। रात्रि जागरण एवं भजन गायन भी हुए। ख्याला मठाधीश गोरखनाथ जी महाराज, तारातरा मठाधीश प्रताप पुरी जी महाराज, चौहटन मठाधीश जगदीश पुरी जी महाराज एवं बेलासर मठाधीश महादेवपुरी जी के सान्निध्य में संपन्न कार्यक्रम में श्री क्षत्रिय युवक संघ के जैसलमेर संवाद प्रमुख तारेंद्र सिंह झिनझिनयाली, चांधन प्रांत प्रमुख उमेद सिंह बडोडा गांव, पूर्व विधायक सांग सिंह भादरिया, छोटू सिंह पूनम नगर सहित विभिन्न गांवों से सैकड़ों श्रद्धालुओं ने उपस्थित रहकर माता से क्षेत्र के मंगल हेतु प्रार्थना की।

हाथीसिंह चूली का देहावसान

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक **हाथीसिंह जी चूली** का देहावसान 26 जनवरी 2023 को 95 वर्ष की आयु में हो गया। उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ के कुल 12 शिविर में भाग लिया जिनमें चार उच्च, चार माध्यमिक और चार प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर थे। उन्होंने अपना प्रथम शिविर सितंबर 1950 में किया था। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

हाथीसिंह जी चूली

पूज्य श्री की जयंती पर कार्यालयों में जगमगाई उल्लास की ज्योति

पूज्य श्री तनसिंह जी की 99वीं जयंती पर अपने उल्लास को प्रकट करते हुए स्वयंसेवकों ने संघ के जयपुर स्थित केंद्रीय कार्यालय संघशक्ति और विभिन्न संभागीय कार्यालयों को रोशनी की लड़ियों से जगमग कर दिया। बाड़मेर स्थित पूज्य तनसिंह सर्किल को भी सजाया गया। विभिन्न कार्यालयों की उल्लासित छवियां यहां प्रस्तुत है

दंपती शिविर व यात्रा का शक्तेषगढ़ पड़ाव

11 जनवरी को भुवनेश्वर से रवाना होकर सभी दंपति रेल मार्ग से 12 जनवरी को चुनार पहुंचे, जहां से सभी बसों के माध्यम से शक्तेशगढ़ स्थित स्वामी अड़गड़ानंद जी महाराज के आश्रम पहुंचे। रात्रि भोजन के पश्चात सभी ने विश्राम किया। 13 जनवरी को दोपहर 1 बजे अड़गड़ानंद जी महाराज आश्रम में पहुंचे जहां सभी शिविरार्थियों ने उनके दर्शन किए। माननीय संरक्षक महोदय ने स्वामी जी से वर्तमान संघ प्रमुख श्री का परिचय कराया जिस पर उन्होंने संघप्रमुख श्री को आशीर्वाद देते हुए संरक्षक श्री के निर्देशन में कार्य करते रहने की बात कही। शाम 4 बजे सत्संग के दौरान महाराज जी के आशीर्वचन श्रवण का लाभ प्राप्त हुआ। अगले दिन 14 जनवरी को मकर सक्रांति के अवसर पर स्वामी जी महाराज ने अपने प्रवचन में मकर सक्रांति के आध्यात्मिक महत्व के बारे में समझाया। आश्रम से रवाना होने से पूर्व पूरे शिविरार्थी एक साथ स्वामी अड़गड़ानंद जी का आशीर्वाद लेने पहुंचे। उन्होंने सभी से अपनी संस्कृति और परंपरा का पालन करते हुए ईश्वर पथ पर बढ़ने की बात कही। उनसे रवाना होने की आज्ञा प्राप्त कर सभी दंपती बसों के माध्यम से चुनार से प्रयागराज पहुंचे। 14 जनवरी की रात्रि को प्रयागराज से रेल द्वारा सभी अपने गंतव्य स्थान को रवाना हुए।

माननीय संरक्षक श्री का बीकानेर प्रवास

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर 27 जनवरी को बीकानेर प्रवास पर रहे। संरक्षक श्री के सान्निध्य में बीकानेर स्थित संभागीय कार्यालय नारायण निकेतन में पूज्य श्री तनसिंह जी की जयंती के उपलक्ष्य में कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम में संभागप्रमुख रेवंत सिंह जाखासर ने पूज्य श्री तन सिंह जी के का जीवन परिचय दिया एवं उनकी विलक्षण प्रतिभा को दशार्ने वाले कुछ प्रेरक वृतांत भी प्रस्तुत किए। माननीय संरक्षक श्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ व्यष्टि से समष्टि की ओर बढ़ने का मार्ग है। इसका दर्शन संकुचित नहीं है, इसमें संपूर्ण मानवता और राष्ट्र के हित की बात भी समाहित है। ईश्वर ने हम सभी को किसी ना किसी उद्देश्य की पूर्ति करने हेतु भेजा है, अगर हम उस उद्देश्य की ओर बढ़ते हैं तो ही जीवन सार्थक बनता है, वरना हमारा जीवन व्यर्थ है। हम सभी का लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति ही है और संघ उसी का एक मार्ग है। इस पर चलकर हम अपने पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों की पूर्ति करते हुए ईश्वर को प्राप्त कर सकते हैं। संरक्षक श्री ने बताया कि 2023-2024 वर्ष को पूज्य श्री तन सिंह जी जन्म-शताब्दी वर्ष के रूप में मनाया जाएगा जिसका मुख्य कार्यक्रम दिल्ली में जनवरी 2024 में आयोजित होगा। कार्यक्रम की रूपरेखा पर कार्य हो रहा है। इस दौरान अखिल भारतीय स्तर पर 100 बड़े समारोहों का आयोजन किया जायेगा जिनमें से बीकानेर में 5 समारोह का आयोजन होना सुनिश्चित हुआ है। कार्यक्रम में बीकानेर से श्री क्षत्रिय युवक संघ के सहयोगी-गण उपस्थित रहे, जिनमें श्री क्षत्रिय सभा के अध्यक्ष करण प्रताप सिंह सिसोदिया एवं पूर्व अध्यक्ष बजरंग सिंह रॉयल, क्षत्रिय सभा के कोलायत अध्यक्ष युद्धवीर सिंह हाड़ला, श्री सादुल राजपूत छात्रावास ट्रस्ट के कर्नल हेम सिंह मंड्रेला, श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के नवीन सिंह आदि सम्मिलित रहे।

राजपूत-चारण समाज के अधिकारियों की बैठक संपन्न

21 जनवरी को श्री क्षत्रिय युवक संघ के केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति (जयपुर) में राजपूत एवं चारण समाज के अधिकारियों की बैठक आयोजित हुई। श्री क्षत्रिय युवक संघ के संघप्रमुख माननीय लक्ष्मण सिंह जी बैण्याकाबास एवं श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी के सान्निध्य में संपन्न इस बैठक में दोनों समाजों के अधिकारियों ने परंपरागत

रूप से चल रहे सम्मानजनक व गरिमापूर्ण आपसी संबधों को और अधिक पुष्ट करने पर चर्चा की एवं नियमित संवाद बनाए रखने के लिए ऐसे कार्यक्रमों की आवश्यकता जताई।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org